कृषि विज्ञान केन्द्र

गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर

दिसम्बर, 2025, अंक 20

हरे चारे के उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण आयोजित

दिनांक 3 नवंबर 2025 को कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर द्वारा ''हरे चारे के उत्पादन तकनकी'' विषय पर संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस प्रशिक्षण में गांव बरलाजसर, उडसर लोडेरा के 23 किसानों ने भाग लिया । कार्यक्रम की शुरूआत में विशेषज्ञों ने पशुपालन में हरे चारे के महत्व, पोषक तत्वों की भूमिका तथा वर्ष भर गुणवतापूर्ण हरा चारा उपलब्ध कराने की आधुनिक तकनीकों पर विस्तार से जानकारी दी । किसानों को मल्टीकट नेपियर, बरसीम, जई, ग्वार, बाजरा जैसे चारा फसलों की उन्नत किस्मों की बुवाई पद्वति, सिंचाई प्रबंधन, कीट–रोग नियंत्रण तथा फसल कटाई संबंधी व्यवहारिक सुझाव प्रदान किये गये । प्रशिक्षकों ने जल सरंक्षण, जैविक उर्वरको का उपयोग, तथा कम लागत से अधिक उत्पादन देने वाले मॉडल भी सांझा किये । अंत में केन्द्र के वैज्ञानिकों ने किसानों को आधुनिक चारा–उत्पादन तकनीकों को अपनाकर पशुपालन की उत्पादकता बढाने का आह्वान किया । कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और प्रतिभागियों ने इस तरह के उपयोगी प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए केन्द्र का आभार व्यक्त किया ।

गेहूँ एवं जौ में बीज उत्पादन तकनीक पर प्रशिक्षण सम्पन्न

दिनांक 4 से 7 नवंबर 2025 तक कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर में ''गेहूँ एवं जौ में बीज उत्पादन तकनीक'' विषय पर चार दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस प्रशिक्षण में गांव पुनुसर, हुडेरा और पातलीसर के 35 किसान एवं किसान महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । प्रशिक्षण के दौरान सस्य विशेषज्ञ श्री हरीश कुमार रछौया ने गेहूँ व जौ की उन्नत किस्मों, उच्च गुणवता वाले बीजों की पहचान, बीजोत्पादन की वैज्ञानिक तकनीक, रोपण विधि, पोषक तत्व प्रबंधन, रोग एवं कीट नियंत्रण तथा फसल की उचित समय पर कटाई और प्रसंस्करण के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की । प्रतिभागियों को खेत की तैयारी, बीज उपचार, आइसोलेशन दूरी, रोग मुक्त बीज उत्पादन की प्रक्रियाएं तथा प्रमाणित बीज उत्पादन के नियमों से भी अवगत कराया गया । प्रशिक्षण में प्रायोगिक सत्र भी आयोजित किए गये, जिससे किसानों को तकनीकों की व्यावहारिक समझ विकसित हो सके । कार्यक्रम के अंत में विशेषज्ञों ने किसानों को गुणवतापूर्ण बीज उत्पादन अपनाने से खेती की लागत घटाने एवं आय बढाने पर जोर दिया ।

समन्वित पोषण प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन

दिनांक 4, से 7 नवंबर 2025 तक दलहनी एवं अदलहनी फसलों में ''समन्वित पोषण प्रबंधन'' विषय पर चार दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया । प्रशिक्षण में गांव

हुडेरा, पातलीसर एवं पुनूसर से आये 35 किसान एवं किसान महिलाओं ने भाग लिया । कार्यक्रम में केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. वी.के.सैनी ने किसानों को मृदा स्वास्थय सुधार, पोषक तत्व प्रबंधन और टिकाउ कृषि अपनाने के वैज्ञानिक तरीकों की विस्तृत जानकारी दी । डॉ. सैनी ने बताया कि समन्वित पोषण प्रबंधन अपनाने से फसलों की उत्पादकता के साथ–साथ मिट्टी की उर्वरता भी लंबे समय तक बनी रहती है, जिससे खेती लाभकारी और टिकाउ बनती है । प्रशिक्षण के दौरान श्री हरीश कुमार रछौया, सस्य विज्ञान विशेषज्ञ ने अनाज एवं दलहनी फसलों में पोषक तत्वों की आवश्यकता, उर्वरक प्रबंधन, फसल वृद्वि के चरणानुसार उर्वरक देने का सही समय एवं जैविक रासायनिक उर्वरकों के संतुलित उपयोग पर व्याख्यान दिया । उन्होंने किसानों को मृदा परीक्षण, जैव–उर्वरकों का उपयोग, जिंक सल्फर जैसे सुक्ष्म पोषक तत्वों की कमी पहचानने तथा उनके प्रबंधन की तकनीकों से भी अवगत कराया ।

कृषि आदान विक्रेताओं के लिए एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स शुरू

कृषि विज्ञान केन्द्र में कृषि आदान विक्रेताओं के लिए कृषि विस्तार सेवा के तहत एक वर्षीय डिप्लोमा कोर्स दिनांक 6 नवम्बर 2025 को शुरू किया गया । कोर्स के शुभारंभ पर हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता गांधी विद्या मंदिर के सचिव ब्रिगेडियर अजयपति त्रिपाठी ने की । मुख्य अतिथि कृषि विस्तार, चूरू सहायक निदेशक डॉ. कुलदीप शर्मा तथा केवीके प्रमुख डॉ. वी. के. सैनी थे ।

डॉ. शर्मा ने बताया कि यह डिप्लोमा कृषि आदान विक्रेताओं के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगा । कोर्स के दौरान विक्रेताओं को खेती से संबंधित तकनीकी जानकारी (किस्मों, उर्वरक प्रबंधन, रोग नियंत्रण व कृषि योजनाओं) मिल सकेगी । यह डिप्लोमा कोर्स एक वर्ष का होगा । जिसमें सप्ताह में एक दिन कक्षा लगेगी तथा कुल 48 कक्षाएं तथा आठ दिन प्रायोगिक प्रशिक्षण व फील्ड विजिट करवाई जाएगी । केवीके प्रमुख डॉ. सैनी ने बताया कि कोर्स में कृषि जलवायु, मृदा विज्ञान, उद्यान विज्ञान, कृषि मशीननरी, कीट व रोग प्रबंधन आदि सहित किसान हितेषी सभी जानकारियां दी जायेगी ।

जैव–सवंर्धित गेहूँ के उत्पादन तकनीक एवं पोषण सुरक्षा विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 7 नवंबर 2025 को केन्द्र में सवंर्धित गेहूँ के उत्पादन तकनीक एवं पोषण सुरक्षा विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें देवीपुरा एवं बरलाजसर गांव की 25 महिला किसानों ने भाग लिया । कार्यक्रम में श्री हरीश कुमार रछौया, विषय विशेषज्ञ (सस्य) ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए सवंर्धित गेहूँ की उन्नत उत्पादन तकनीकों, गुणवतापूर्ण बीज चयन, बीज उपचार, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, समय पर सिंचाई, रोग कीट नियंत्रण तथा खरपतवार प्रबंधन के वैज्ञानिक तरीकों की विस्तार से जानकारी प्रदान की । उन्होंने बताया कि मिट्टी परीक्षण के आधार पर खादों का उपयोग, जैव उर्वरकों का समावेश, फसल चक्र, अवशेष प्रबंधन तथा जल सरंक्षण आधारित पद्वतियों को अपनाने से गेहूँ की उपज में वृद्वि की जा सकती है । गृह विज्ञान विशेषज्ञ डॉ. रमन जोधा ने महिलाओं को परिवार की पोषण सुरक्षा से जुडी आवश्यक जानकारी देते हुए समझाया कि सवंर्धित गेहूँ, बाजरा, ज्वार तथा दालें जैसे स्थानीय खाधान्नों का संतुलित उपयोग न केवल परिवार के स्वास्थय को बेहतर बनाता है बल्कि घरेलू स्तर पर पोषण प्रबंधन में भी सक्षम बनाता है । कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को उन्नत कृषि एवं पोषण तकनीकों का ज्ञान देकर उन्हें आत्मनिर्भर एवं सक्षम बनाना था, प्रशिक्षण के अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए आगामी रबी मौसम में इन तकनीकों

को अपनाने का आग्रह किया गया । कार्यक्रम में किसानों को फसल चक्र, दलहनी फसलों के महत्व, नमी सरंक्षण तकनीक, खरपतवार प्रबंधन, कीट–रोग नियंत्रण के समन्वित उपायों तथा जैविक खाद, कम्पोस्ट एवं हरी खाद के उपयोग जैसी व्यावहारिक जानकारियां भी दी गई ।

विशेषज्ञों ने बताया कि इन तकनीको से न केवल उपज बढती है बल्कि मिट्टी की सरंचना एवं उर्वरक क्षमता भी बेहतर होती है । प्रशिक्षण उपरान्त कृषक महिलाओं को गेहूँ किस्म **DBW-187** के बीज प्रदर्शन के रूप में उपलब्ध करवाये गये।

सरंक्षित सब्जी उत्पादन पर एक दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर द्वारा अनुसूचित जाति उप–योजना अंतर्गत दिनांक 25 नवंबर 2025 को सरंक्षित सब्जी उत्पादन विषय पर संस्थागत प्रशिक्षण कार्यक्रम का अयोजन किया गया । इस प्रशिक्षण में ग्राम हुडेरा के 20 किसानों ने भाग लिया ।कार्यक्रम में विषय वस्तु विशेषज्ञ(उद्यान विज्ञान) डॉ. अजय कुमावत ने प्रतिभागी किसानों को सरंक्षित सब्जी उत्पादन की नवीनतम तकनीकों, कीट एवं रोग प्रबंधन के जैविक उपाय, फसल चक्र, अंतरवर्तीय फसलों आदि के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की । उन्होने सब्जियों में रसायनों के न्यूनतम उपयोग, समन्वित कीट प्रबंधन, पोषक तत्व प्रबंधन तथा बाजार में सुरक्षित एवं गुणवतापूर्ण सब्जियों की बढती मांग पर विशेष बल दिया ।

निकरा परियोजना अंतर्गत दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन

कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर द्वारा निकरा परियोजना अंतर्गत दिनांक 25 एवं 26 नवंबर को गोभी वर्गीय फसल उत्पादन तकनीक एवं प्रबंधन विषय पर दो दिवसीय संस्थागत प्रशिक्षण का आयोजन किया गया । इस प्रशिक्षण में ग्राम मीतासर के 20 किसान सहभागी रहे । कार्यक्रम में विषय विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान) डॉ. अजय कुमावत ने किसानों को गोभी वर्गीय फसलों–फूल गोभी, बंदगोभी, पत्तागोभी तथा ब्रोकली की उन्नत उत्पादन तकनीकों पर विस्तृत जानकारी प्रदान की । उन्होंने उच्च गुणवता वाले चयन, रोपाई विधि, पोषक तत्व प्रबंधन, जैविक एवं रासायनिक कीट रोग नियंत्रण, फसल अवधि के अनुसार सिंचाई प्रबंधन तथा बाजारोन्मुख उत्पादन रणनीतियों पर विशेष बल दिया । प्रशिक्षण के दौरान किसानों को खेत स्तरीय समस्याओं के व्यावहारिक समाधान, रोग पहचान, एकीकृत पोषण व कीट प्रबंधन (आईएनएम एवं आईपीएम) तथा लागत घटाने और उत्पादन बढाने की तकनीकों से परिचित कराया गया । प्रतिभागी किसानों ने विषय विशेषज्ञ से अपने प्रश्न पुछकर तकनीकी समाधान प्राप्त किये और गोभी वर्गीय फसलों की वैज्ञानिक खेती अपनाने की प्रतिबद्वता व्यक्त की ।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री मुकेश शर्मा (पौध सरंक्षण विशेषज्ञ) श्री हरीशकुमार रछौया (फसल उत्पादन विशेषज्ञ) श्री श्याम बिहारी (पशुपालन विशेषज्ञ) श्री अजय कुमावत (बागवानी विशेषज्ञ) श्री कानाराम सोढ (फार्म मैनेजर) श्री रमेश चौधरी (वरिष्ठ अनुसन्धान अध्येता-NICRA)	डॉ. रमन जोधा (विषय वस्तु विशेषज्ञ गृह विज्ञान) Designed श्री सुनील कुमार वी.वी.,स्टैनो Typed श्री ओ.पी.शर्मा, टाइपिस्ट	डॉ. वी. के. सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर,चूरू–I